REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 4 | JANUARY - 2019

सामान्य एवं आरक्षित वर्ग के छात्रों की बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. लवकुश सिंह[1] और डॉ. ध्रुव कुमार द्विवेदी[2]
[1]प्रधानाचार्य महर्षि दुर्वासा इन्टर कालेज, ककरा, दुबावल, प्रयागराज (इलाहाबाद)
[2]प्राचार्य सरस्वती विज्ञान महा. रीवां (म.प्र.)

सारांशः–

सरांशतः कहा जा सकता है कि जहॉ सामान्य और आरक्षित वर्ग के छात्र–छात्राओं के बुद्धि, में कुछ समानतायें विद्यमान हैं वहीं इन दोनो में असमानतायें भी परिलक्षित हुयी हैं। समग्र रूप से सामान्य और आरक्षित वर्ग के बुद्धि स्तर में जहॉ कोई अन्तर विद्यमान नहीं है वहीं पर दानों समूहों में आवासीय आधार पर बुद्धि स्तर में अन्तर प्राप्त हुआ है। सामान्य और आरक्षित दानों समूहों में शहरी विद्यार्थी ग्रामीण विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च बुद्धि स्तर वाले हैं। इसका कारण शहरी विद्यार्थियों को सर्व सुविधा सम्पन्न होना,उनका शहरी परिवेश और इसके विपरीत ग्रामीण विद्यार्थियों को उस स्तर की सुविधा न मिल पाना हो सकता है। सामान्य और आरक्षित दोनों समूहों में लैंगिक आधार पर कोई अन्तर प्राप्त नहीं हुआ अर्थात सामान्य और आरक्षित विद्यार्थियों के बुद्धि स्तर पर कोई लैंगिक प्रभाव नहीं होता है। इसी प्रकार 'सामान्य छात्रों और आरक्षित छात्रों', 'सामान्य छात्राओं और आरक्षित छात्राओं' 'सामान्य ग्रामीण छात्र–छात्राओं और आरक्षित ग्रामीण छात्र–छात्राओं' और 'सामान्य शहरी छात्र–छात्राओं और आरक्षित शहरी छात्र–छात्राओं' के बुद्धि स्तर में समानता परिलक्षित हुई है।

मुख्य शब्द :–सामान्य एवं आरक्षित वर्ग, छात्र–छात्राओं' के बुद्धि स्तर।

प्रस्तावनाः–

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है सामाजिक जीवन को सुचारू रूप से चलाने के लिए शिक्षा व्यवस्था की आवश्यकता होती है। शिक्षा को एक सामाजिक प्रक्रिया के रूप में भी स्वीकार किया जाता है वायड एच0 वोड का कथन है समाज और शिक्षा का एक दूसरे से पारस्परिक कारण और परिणाम का सम्बन्ध है। किसी भी समाज का स्वरूप उसकी शिक्षा व्यवस्था के स्वरूप को निर्धारित करता है। इस कथन से स्पष्ट है कि शिक्षा और समाज दोनो अविच्छिन्न रूप से परस्पर गुंथे हुए है। शिक्षा समाज में फलती फूलती है ओर समाज भी शिक्षा कीछाया में अपने को अधिक प्राणवान, गतिशील, सजग एवं सुसंस्कृत बनाता है। एक की प्रगति दूसरे की प्रगति पर निर्भर करती है। इस प्रकार शिक्षा का सम्बन्ध व्यक्ति तथा शिक्षा दोनो से होता है। शिक्षा का लक्ष्य जीवन को समुन्नत बनाना, शैक्षिक उददेश्यों की पूर्ति करना, जीवन पद्धति में समानता लाना और मानव जीवन को सफल बनाने में सहायता प्रदान करना आदि है।

शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है। इसके द्वारा व्यक्ति की जन्मजात शक्तियों का विकास, उसके ज्ञान एवं कला कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है और उसे सभ्य, सुसंस्कृत एव योग्य बनाय जाता है। बालक जब इस संसार में आता है तो वह एक अबोध एवं असहाय प्राणी मात्र होता है। वह बोलना, चलना, हंसना, खेलना इत्यादि क्रियायें अपने माता–पिता तथा परिवार से सीखता है। जब बालक परिवार से निकलकर विद्यालय में प्रवेश करता है तो वहॉ पर उसे नवीन परिस्थितियों का सामना करना पडता है इन परिस्थितियों का सामना करने हेतु वह अनुकरण का सहारा लेता है। विद्यालय में वह पढना–लिखना, सामाजिक आचरण, अच्छी आदतें आदि को सीखता है। सीखने की यह क्रिया आजीवन चलती रहती है और इस सीखने की प्रकिया के द्वारा वह अपने व्यवहार में परिमार्जन एवं परिवर्तन करता जाता है। किसी समाज में सदैव चलने वाली सीखने–सिखाने की यह सोददेश्य प्रकिया ही शिक्षा कहलाती है।

बुद्धिः–

शिक्षा के क्षेत्र में बुद्धि के प्रत्यय का एक महत्वपूर्ण स्थान स्वीकार किया जाता हे। बुद्धि से तात्पर्य संज्ञानात्मक व्यवहारों के उस सम्पूर्ण वर्ग से

हे जो सूझ के साथ समस्या समाधान करने, नयी परिस्थितियेां मे अनुकूलन करने, अमूर्त ढंग से सीखने तथा अपने अनुभवों से लाभ उठाने सम्बन्धी किसी व्यक्ति की क्षमता को इंगित करती है। अत': बुद्धि व्यक्ति के व्यक्तित्व का एक प्रमुख पक्ष हे जो इसे वातावरण के साथ समायोजन करने, सीखने, समस्याओं का समाधान करने एवं चिन्तन करने की क्षमता प्रदान करती हे अतः बुद्धि के महत्व को दृष्टिगत रखते हुए प्रस्तूत अध्ययन में सामान्य एवं आरक्षित वर्ग के छात्रों के बुद्धि की स्थिति को जानने का प्रयास किया गया है।

अध्ययन की आवश्यकताः–

प्रस्तुत अध्ययन एक महत्वपूर्ण सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक समस्या के समाधान हेतु है क्यो कि सामाजिक आर्थिक स्थिति एवं वशानुक्रम का प्रभाव बालक की बुद्धि, स्मृति एवं सृजनात्मकता पर पडता है। अतः यह आवश्यक हो जाता है कि समाज के पिछडे वर्ग एवं सामान्य वर्ग के छात्रों की बुद्धि, स्मृति एवं सृजनात्मकता का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाय जिससे शिक्षा जगत एवं समाज को उचित दिशा निर्देश मिल सके।

वर्तमान में जहॉ सम्पूर्ण भारत मे सर्व शिक्षा अभियान चलाया जा रहा है तथा साथ ही सभी की शिक्षा को अनिवार्य माना जा रहा हे। भारत सरकार द्वारा आरक्षित वर्ग की शिक्षा पर भी जोर दिया जा रहा हे। तथा इसके लिए इन्हे उचित शिक्षा की व्यावसथा भी की जा रही है, परन्तु आरक्षित वर्ग की मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं, उनके व्यक्तित्व गुणों की विशेषताओ, उनके बुद्धि स्तर, स्मृति स्तर, सृजनात्मकता आदि को जाने बिना आरक्षित वर्ग के समग्र विकास और उनकी शिक्षा–दीक्षा के लिए की जाने वाली व्यवस्थाओं की सफलता संदिग्ध हो सकती है। अतः आवश्यक हो जाता है कि आरक्षित वर्ग के बालको के बुद्धि, स्मृति एवं सृजनात्मकता का अध्ययन किया जाय कि आरक्षित वर्ग के बालक सामान्य बालकों से उपरोक्त आयामों में किस प्रकार भिन्न है तथा उनके कारण क्या है? तथा इन कारणों को किस प्रकार दूर किया जा सकता है। इन्ही औचित्यों के कारण शोधार्थी ने प्रस्तुत अध्ययन में सामान्य एवं आरक्षित वर्ग के छात्रों की बुद्धि, स्मृति एवं सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन करना सुनिश्चित किया है जिससे शिक्षाजगत को उचित दिशा निर्देश मिल सकेगा और शिक्षा में उचित संशोधन एवं संवर्धन हो सकेगा।

विदेशी एवं भारतीय साहित्य के अवलोकन से यह परिलक्षित हेाता हे कि अब तक इस क्षेत्र मे बहुत कम शोधकार्य हुएए हे। यदि हुए भी हे तो कुछ सीमित आयामों में ही हुए है अधिकांश अध्ययनों में विभिन्न स्तर के छात्रों, अध्यापको, अभिवावकों पर अध्ययन किया गया है, परन्तु प्रस्तुत अध्ययन माध्यमिक कक्षाओं में अध्ययनरत सामान्य एवं आरक्षित वर्ग केबालकों केबुद्धि, का तुलनात्मक अध्ययन करने का प्रयास है जिससे शिक्षा जगत को नई दिशा मिल सकेगी।

शिक्षा तीन स्तरों में माध्यामिक स्तर की शिक्षा एक ऐसी कडी है जो प्राथमिक स्तर एवं उच्च स्तर की शिक्षा को जोडती है अतएव माध्यमिक शिक्षा द्वारा प्राथमिक शिक्षा की त्रुटियों को दूर किया जा सकता है तथा उच्च शिक्षा में प्रवेश के लिए छात्रों को योग्य बनाया जा सकता हे। यदि माध्यमिक सतर पर किशाोरों को उपयुक्त पथ–प्रदर्शन प्रदान करा दिया जाता है तो निश्चित रूप से आगे आने वाली समस्याओं की यथार्थता को समझने में महत्वपूर्ण योगादान होगा क्योकि किशोरावस्था शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं सांवेगिक परिवर्तनों की व्यक्तिगत विकास की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण होती है। वाल्यावस्था तथा प्रौढावस्था के बीच संधि काल होने के कारण किशोरावस्था को जीवन का सर्वाधिक कठिन काल कहा जाता है अतः माध्यमिक स्तर के छत्रों के लिए अत्यन्त सजग, संवेदनशील एवं उचित पथ–प्रदर्शन, निर्देशन की आवश्यकता होती हे। यदि किशाोरावस्था की शिक्षा में किसी प्रकार की विकृति आती हे। तो निश्चित है कि आगामी शिक्षा में विसंगतियों की संभावनाबढ जायेगी और इसके परिणाम भयंकर होगे। अतः माध्यमिक स्तर के छात्रों की बुद्धि, स्मृति एवं सृजनात्मकता का अध्ययन करना एक आवश्यक कार्य बन जाता हे।

वर्तमान शोध अध्ययन के परिणाम उन शिक्षाशास्त्रियों, प्रशासको, सलाहकारों और अध्यापकों के लिए उपयोगी होगे जो माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करते है तथा उच्च विद्वतापूर्ण उपलब्धि एवं अन्य मनोसामाजिक चरों को प्राप्त करने के लिए विद्यार्थियों को प्रेरित करते है।

समस्या अभिकथनः–प्रस्तुत अध्ययन की समस्या कोअग्रलिखित शब्दों में व्यक्त किया गया हैः–
"सामान्य एवं आरक्षित वर्ग के छात्रों की बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन"

सम्प्रत्ययों का स्पष्टीकरण : प्रस्तुत अध्ययन में प्रयुक्त सम्प्रत्ययों का स्पष्टीकरण अग्रवर्णित हैं।

सामान्य :–

प्रस्तुत अध्ययन में सामान्य से अभिप्राय सामान्य वर्ग के छात्र–छात्राओं से है। दूसरे शब्दों में प्रस्तुत अध्ययन में सामान्य वर्ग का तात्पर्य उन सामान्य अथवा सवर्ण जातियों के छात्र–छात्राओं से है जिन्हे भारतीय संविधान के अनुसार किसी प्रकार का आरक्षण प्राप्त नही है। इसमें प्रमुख रूप से ब्राहम्नण, क्षत्रीय, वैश्य आदि जाति के छात्र–छात्राओं को लिया गया है।

आरक्षित वर्गः–

प्रस्तुत अध्ययन में आरक्षित वर्ग से अभिप्राय आरक्षित वर्ग के छात्र–छात्राओं से है। दूसरे शब्दों में प्रस्तुत अध्ययन में आरक्षित वर्ग का तात्पर्य उन पिछडी, अनुसूचिम जाति एवं अनुसूचित जन जाति के छात्र–छात्राओं से है जिन्हे भारतीय संविधान के अनुसार आरक्षण प्राप्त होता है तथा सेवाओं या रोजगार, प्रवेश–परीक्षाओं आदि में इनके स्थान आरक्षित होते है तथा शुल्क अआदि में छूट के अतिरिक्त अन्य सुविधायें उपलब्ध करायी जाती हे।

अतः प्रस्तुत अध्ययन में आरक्षित वर्ग से तात्पर्य पिछडी जाति, अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के छात्र–छात्राओं से है।

बुद्धि :–

बुद्धि को व्यक्ति की मानसिक योग्यता के रूप में स्वीकार किया जाता है जो व्यक्ति को अपनी समस्याओं का समाधान खोजने,वातावरण के साथ समायोजन करने तथा विषयवस्तुओं को अधिगम करने की क्षमता प्रदान करती है।

बंकिघम के अनुसार– "बुद्धि सीखने की योग्यता है।"

बुद्धि व्यक्ति की वह मानसिक योग्यता है जिससे व्यक्ति अपने वातावरण के साथ उचित समायोजन करता है समस्याओं का समाधान करता है तथा अधिगम करता है।

प्रस्तुत अध्ययन में बुद्धि से तात्पर्य डॉ0 एम0 जोशी द्वारा निर्मित सामान्य मानसिक योग्यता मापनी पर छात्र–छात्राओं के प्राप्तांकों से है।

अध्ययन के उददेश्यः–

प्रस्तुत अध्ययन के निम्नलिखित उददेश्य निर्धारित किए गयेः–

1. माध्यमिक स्तर के सामान्य वर्ग के छात्र–छात्राओं के बुद्धि स्तर को ज्ञात करना।
2. माध्यमिक स्तर के आरक्षित वर्ग के छात्र–छात्राओं के बुद्धि स्तर को ज्ञात करना।
3. सामान्य एवं आरक्षित वर्ग के विद्यार्थियों के बुद्धि स्तर की तुलना करना।
4. लिंग भेद के आधार पर सामान्य वर्ग के छात्र–छात्राओं के बुद्धि स्तर की तुलना करना।
5. आवासगत भेद के आधार पर सामान्य वर्ग के छात्र–छात्राओं के बुद्धि स्तर की तुलना करना।
6. लिंग भेद के आधार पर आरक्षित वर्ग के छात्र–छात्राओं के बुद्धि स्तर की तुलना करना।
7. आवासगत भेद के आधार पर आरक्षित वर्ग के छात्र–छात्राओं के बुद्धि स्तर की तुलना करना।

प्राप्त आंकडो, समंको की सांख्यकीय व्याख्या एवं विश्लेषण करना।निष्कर्ष, सुझाव, और शैक्षिक निहितार्थ प्रस्तुत करना।

अध्ययन की परिकल्पनायेः–

प्रस्तुत अध्ययन की समस्या को दृष्टिगत करते हुए निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया ।

1. सामान्य एवं आरक्षित वर्ग के छात्रों के बुद्धि स्तर में कोई सार्थक अन्तर नही है।
2. लिगं भेद के आधार पर सामान्य वर्ग के छात्र–छात्राओं के बुद्धि स्तर में कोई सार्थक अन्तर नही है।
3. आवासगत भेद के आधार पर सामान्य वर्ग के ग्रामीण एवं शहरी छात्र–छात्राओं के बुद्धि स्तर में कोई सार्थक अन्तर नही है।
4. लिगं भेद के आधार पर आरक्षित वर्ग के छात्र–छात्राओं के बुद्धि स्तर में कोई सार्थक अन्तर नही है।
5. आवासगत भेद के आधार पर आरक्षित वर्ग के ग्रामीण एवं शहरी छात्र–छात्राओं के बुद्धि स्तर में कोई सार्थक अन्तर नही है।
6. सामान्य वर्ग एवं आरक्षित वर्ग के छात्र–छात्राओं के बुद्धि स्तर में कोई सार्थक अन्तर नही है।
7. सामान्य वर्ग और आरक्षित वर्ग के छात्राओं के बुद्धि स्तर में कोई सार्थक अन्तर नही है।
8. सामान्य वर्ग और आरक्षित वर्ग के ग्रामीण के छात्र–छात्राओं के बुद्धि स्तर में कोई सार्थक अन्तर नही है।
9. सामान्य वर्ग और आरक्षित वर्ग के शहरी छात्र–छात्राओं के बुद्धि स्तर में कोई सार्थक अन्तर नही है।

अध्ययन का क्षेत्रः–

इलाहाबाद जिले के ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्र में सिथत माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा 9 एवं10 में कक्षाओं मे अध्ययनरत 600 छात्र–छात्राओं को न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया। इसके लिए सर्वप्रथम इलाहाबाद जिले मे ग्रामीण क्षेत्र में स्थित एवं नगरीय क्षेत्र में स्थित विद्यालयों की सूची बनाकर इस सूची में से 10 ग्रामीण विद्यालयों एवं 10 शहरी विद्यालयों का चयन यादृच्छित विधि से किया गया , तत्पश्चात इन विद्यालयों के कक्षा 9 एवं 10 में अध्ययनरत छात्रों एवं छात्राओं की अलग–अलग सूची बनाकर इन सूचियों में से 300 सामान्य एवं 300 आरक्षित वर्ग के विद्यार्थियों

का चयन यादृच्छिक विधि से किय गया , सामान्य एवं आरक्षित प्रत्येक वर्ग में 100 छात्रों तथा 50 छात्राओं तथा प्रत्यके वर्ग में 150 ग्रामीण एवं 150 शहरी विद्यार्थियों का चयन न्यादर्श के रूप मे कियाा गया ।

शोध में प्रयुक्त उपकरणः– प्रस्तुत शोध अध्ययन में निम्नलिखित मानकीकृत उपकरणों का प्रयोग आंकडो के संकलन हेतु किय गया –

1. डॉ0 एम0 सी0 जोशी द्वारा निर्मित सामान्य मानसिक योग्यता मापनी

आंकडो का सांख्यिकीय विष्लेषणः–

परीक्षणों को प्रशासित करने के उपरान्त उन्हे छात्र, छात्रा ग्रामीण तथा शहरी उप वर्गो में वर्गीकृत करने के पश्चात इन वर्गो उप वर्गो का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रानितक अनुपात मान ज्ञात करके सारणीकरण करके तुलना की गई।

सामान्य ग्रामीण बालिका / सामान्य शहरी बालिका

क्र. म.	बुद्धि	क्र. म.	बुद्धि
1	88	1	34
2	73	2	81
3	61	3	66
4	38	4	68
5	45	5	40
6	75	6	42
7	45	7	51
8	25	8	42
9	80	9	48
10	24	10	55
11	47	11	70
12	38	12	45
13	40	13	69
14	72	14	54
15	58	15	44
16	36	16	72
17	32	17	52
18	58	18	37
19	65	19	66
20	62	20	32
21	34	21	74
22	52	22	58
23	66	23	45
24	38	24	55
25	40	25	72

आरक्षित ग्रामीण बालिका / आरक्षित शहरी बालिका

क्र. सं.	बुद्धि	क्र. सं.	बुद्धि
1	47	1	71
2	28	2	55

3	48	3	67
4	65	4	44
5	35	5	58
6	50	6	45
7	40	7	38
8	72	8	61
9	58	9	68
10	67	10	33
11	80	11	34
12	57	12	45
13	45	13	55
14	69	14	74
15	37	15	69
16	56	16	44
17	52	17	50
18	60	18	67
19	55	19	59
20	68	20	55
21	52	21	38
22	64	22	68
23	41	23	52
24	65	24	84
25	48	25	43

समंक सारिणी

सामान्य ग्रामीण बालक		सामान्य शहरी बालक	
क. स.	बुद्धि	क. सं.	बुद्धि
1	52	1	58
2	45	2	76
3	35	3	69
4	69	4	55
5	71	5	65
6	43	6	67
7	68	7	49
8	38	8	75
9	58	9	65
10	68	10	47
11	65	11	72
12	43	12	68
13	65	13	51
14	40	14	70
15	44	15	65
16	48	16	74

LBP PUBLICATION

17	62	17	53
18	50	18	40
19	63	19	70
20	41	20	82
21	46	21	45
22	33	22	55
23	48	23	78
24	81	24	66
25	66	25	57

आरक्षित ग्रामीण बालक		आरक्षित शहरी बालक	
क्र. सं.	बुद्धि	क्र. सं.	बुद्धि
1	38	1	63
2	81	2	62
3	55	3	77
4	35	4	60
5	58	5	65
6	38	6	78
7	62	7	72
8	72	8	58
9	32	9	67
10	68	10	8
11	46	11	57
12	55	12	66
13	55	13	69
14	42	14	73
15	68	15	56
16	38	16	66
17	39	17	32
18	78	18	58
19	52	19	65
20	70	20	62
21	39	21	8
22	58	22	52
23	52	23	66
24	68	24	68
25	54	25	40

बुद्धि परीक्षा के विभिन्न घटकों का पारस्परिक एवं कुल फलांक से सह–सम्बन्ध (संख्य = 400)

निष्कर्षः–

प्रस्तुत अध्ययन के प्रमुख परिणाम एवं निष्कर्ष निम्नवत है–

1. सामान्य वर्ग एवं आरक्षित वर्ग का बुद्धि स्तर एक समान है अर्थात सामान्य वर्ग एवं आरक्षित वर्ग के बुद्धि स्तर पर उनकी सामाजिक स्थिति का कोई प्रभाव परिलक्षित नही होता है।
2. सामान्य वर्ग के छात्रो एवं छात्राओं के बुद्धि स्तर में समानता है। अर्थात सामान्य वर्ग के छात्रो एवं छात्राओं के बुद्धि स्तर पर उनकी लैंगिक स्थिति का कोई प्रभाव नही पडता है।
3. सामान्य वर्ग के ग्रामीण छात्र–छात्राओं के बुद्धि स्तर पर की तुलना में अधिक है अर्थात सामान्य वर्ग केग्रामीण एवं शहरी छात्र–छात्राओं के बुद्धि स्तर पर इनकी आवासीय स्थिति का प्रभाव पडता है, सामान्य वर्ग के शहरी छात्र–छात्राओं इसी वर्ग के ग्रामीण छात्र–छात्राओं की अपेक्षा अधिक बुद्धि वाले है।
4. आरक्षित वर्ग के छात्रो एवं छात्राओं के बुद्धि स्तर में समानता है। अर्थात आरक्षित वर्ग के छात्रो एवं छात्राओं के बुद्धि स्तर पर उनकी लैंगिक स्थिति का कोई प्रभाव नही पडता है।
5. आरक्षित वर्ग के ग्रामीण एवं शहरी छात्र–छात्राओं के बुद्धि स्तर पर इनकी आवासीय स्थिति का प्रभाव पडता है, आरक्षित वर्ग के शहरी छात्र–छात्राओं इसी वर्ग के ग्रामीण छात्र–छात्राओं की अपेक्षा अधिक बुद्धि वाले है।
6. सामान्य वर्ग के छात्रो एवं आरक्षित वर्ग के छात्रों के बुद्धि स्तर में समानता है अर्थात छात्रों के बुद्धि स्तर पर उनकी सामाजिक स्थिति का कोई प्रभाव नही पडता है।
7. सामान्य वर्ग की छात्राओं एवं आरक्षित वर्ग की छात्राओं के बुद्धि स्तर में समानता है। अर्थात छात्राओं के बुद्धि स्तर पर उनकी सामाजिक स्थिति का कोई प्रभाव नही पडता है।
8. सामान्य वर्ग के ग्रामीण छात्र–छात्राओं एवं आरक्षित वर्ग के ग्रामीण छात्र–छात्राओं के बुद्धि स्तर में समानता है। अर्थात ग्रामीण छात्र–छात्राओं के बुद्धि स्तर पर उनकी सामाजिक स्थिति का कोई प्रभाव नही पडता है।
9. सामान्य वर्ग के शहरी छात्र–छात्राओं एवं आरक्षित वर्ग के शहरी छात्र–छात्राओं के बुद्धि स्तर में समानता है अर्थात शहरी छात्र–छात्राओं कें बुद्धि स्तर पर उनकी सामाजिक स्थिति का कोई प्रभाव नही पडता है॥

सन्दर्भ ग्रन्थः–

1. दत्त एन.के. : द ओरिजेन एण्ड ग्रोथ आफ कास्ट इन इण्डिया, बाल्यूम वन, द बूक कम्पनी, कलकत्ता, (1931)।
2. घपोला टी. एस. : ए स्टडी आफ परसोनालिटी मेकअप आफ हडरिजन स्टूडेन्ट, अनपब्लिसड मैनुक्रिप्ट काशी विद्या पीठ, वाराणसी (1977)
3. नरूल्ला एस. एण्ड नायक जे. पी. : हिस्ट्री आफ एजुकेसन इन इण्डिया
4. पन्धारी राघवेन्द्र : प्राचीन भारत में सामाजिक परिवर्तन 700–1000 ई0 पीएच. डी. वी. एच. यू. (1981)
5. परान्जये एम. आर. : ए सोर्स बुक आफ मार्डन इण्डियन एजूकेशन
6. प्रसाद एण्ड डॉ. नर्मदेस्वर : जाति व्यवस्था, राजकमल प्रकाशन प्रा0 लि0 देहली 6, (1965)
7. वर्ट सी0 : द वैकबर्ड चाइल्ड, यूनिवर्सिटी आफ लन्दन प्रेस लि0 (1950)
8. बिन्दू आर. पी. : प्रोग्रेस आफ एजूकेशन आफ सिडयूल कास्ट इन उत्तर प्रदेश, अनपब्लिशड पी.एच.डी. थिसिस इन एजूकेशन, बी. एच. यू. (1974)
9. अम्बेडकर वी.आर. : हू वेयर शूद्राज? हाऊ दे कम टू द फोर्थ वर्न इन द इण्डी आर्यन सोसाइटी, बाम्बे घैकर्स, 1946
10. अम्बेडकर वी. आर. : कम्पेडियम शिडयूल कास्ट एण्ड एस. टी. न्यू देलही, डिपार्टमेण्ट आफ सोशल वेलफेयर गवर्नमेण्ट आफ इण्डिया, 1971
11. ओलीवार–सी काक्स : कास्ट एण्ड क्लास रेस, पब्लिस्ड बाई मेन्थली रिव्यू प्रेंस, 62, वेस्ट 14 स्ट्रीट न्यूयार्क 1984।
12. बानू जीव एम0 : एजूकेशनल प्रोग्रेस आफ सिडयूल कास्ट एण्ड सिडयूल ट्राइब्स (1967–68, 1977–78) नेशनल इन्सटिटयूट आफ एजूकेशन
13. बलिराम राम : काशी हिन्दू विष्वविद्यालय में अध्ययनरत अनुसूचित जाति के छात्र–छात्राओं के रहन–सहन एवं अध्ययन की स्थिति का एक विश्लेषणात्मक सर्वेक्षण, शोध प्रबन्ध, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी (1986)
14. बोस ए. वी. : प्राबल्म आफ एजूकेशनल डेवलपमेण्ट आफ सिडयूल कास्ट, 18वी. रिपोर्ट (1966), इन बुच एम. वी. (एड) सेकेण्ड सर्वे आफ रिसर्च इन एजूकेशन, बरौदा, मार्डन प्रिन्टर्स, सोसाइटी फार एजूकेशनल रिसर्च एण्ड डेवलपमेण्ट, (1979)
15. भारतीय विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग अथवा राधाकृष्णन आयोग 1948–49
16. मुखर्जी एण्ड रविन्द्र नाथ : भारतीय सामाजिक संस्थायें, विवेक प्रकाशन, 7. यु. ए., जवाहर नगर दिल्ली, (1982)
17. गॉधी एम. के. : (1940) द इयर बुक आफ एजूकेशन।
18. गॉधी एम. के : (1937) हरिजन मासिक पत्रिका अक्टूबर और जुलाई।

डॉ. लवकुश सिंह
प्रधानाचार्य महर्षि दुर्वासा इन्टर कालेज, ककरा, दुबावल, प्रयागराज (इलाहाबाद)

LBP PUBLICATION